पुस्तकों से बहाली | एक पुस्तकालय परियोजना

लक्ष्मी करुणाकरण

फिर से स्कूल खुलने पर, हमारी सार्वजनिक स्कूली शिक्षा व्यवस्था, पलायन, बाल श्रम, बाल विवाह आदि के चलते कक्षाओं से ग़ायब बच्चों की समस्या से जूझेगी। एक ओर जहाँ यह एक कड़ी चुनौती बनी रहेगी, एक और गूढ़ चुनौती रहेगी — स्कूल वापसी कर रहे बच्चे। इन बच्चों को न सिर्फ़ अपने पीछे रह जाने से निपटने के लिए शैक्षणिक समर्थन दरकार होगा, बल्कि महामारी के दौरान बीते अपने जीवन को समझने, उससे उबरने और फिर से सीखने के लिए तैयार होने में मनो-सामाजिक सहारा भी चाहिए होगा। हालाँकि शिक्षा प्रणाली, इस शैक्षिक पिछड़ने की भरपाई करने के लिए तैयार हो रही है, लेकिन यह भी ज़रूरी है कि शिक्षक व शिक्षाविद महामारी के दौरान हुई सामाजिक व भावनात्मक अवनति पर भी पूरा ध्यान दें।

तनाव के चलते शुरू हुआ पिछड़ना

कोविड-19 महामारी के दौरान बच्चे ज़बरदस्त तनाव से गुज़रे हैं। संक्रमण हो जाने का, घर के लोगों को खोने का लगातार मंडराता डर, अपने दोस्तों व शिक्षकों से न मिल पाना, जबरिया पलायन, घरेलू व बाल हिंसा आदि। लॉकडाउन के दौरान चाइल्डलाइन इंडिया की टेलीफ़ोन हेल्पलाइन लगातार बजती ही रही, जो कि बच्चों द्वारा महसूस गई पीड़ा की सूचक है। साल 2020 के लॉकडाउन के पहले 11 दिनों में इस हेल्पलाइन ने 92,000 से ज़्यादा ऐसे एसओएस कॉल्स प्राप्त किए जो कि दुर्व्यवहार और हिंसा से सुरक्षा की गुहार लगा रहे थे।

पीएचडी, 'येल स्कूल ऑफ़ मेडिसिन' के 'चाइल्ड स्टडी सेंटर' में सहायक प्राध्यापक और 'येल प्रोग्राम इन अर्ली चाइल्डहुड एजुकेशन' में सह-निदेशक, नैन्सी क्लोज़ कहती हैं[i], "मैं बड़े पैमाने पर और सामान्य समय में विकासात्मक रूप से उपयुक्त स्थिति से कहीं ज़्यादा प्रतिगमन देख रही हूँ। मैंने बच्चों को तुतला-तुतला कर पिछड़ते देखा है, अपने दैनिक कार्य निपटाने में वे मदद माँगते हैं, सोने और शौच आदि में उन्हें मदद लगती है — आम तौर से कहीं ज़्यादा मदद। प्रबल भावनाओं से निपटना और उन्हें व्यक्त करना सच में चुनौती भरा हो सकता है। नतीजतन, छोटे-बड़े बच्चों और यहाँ तक कि कॉलेज के विद्यार्थियों में भी हम गुस्सा और तुनक-मिज़ाजी देख रहे हैं। यही नहीं, व्यवहार सम्बन्धी तमाम तरह की मुश्किलें भी हमें दिख रही हैं। हम देख रहे हैं कि अपने दोस्तों या अपने शिक्षकों के साथ न हो पाने के चलते बच्चे वाक़ई उदास रहने लगे हैं तथा स्कूल के कामकाज में बदलाव के कारण अतिरंजित भावनाएँ और व्यवहार दिखाने लगे हैं। अब चूँकि हम सब सामान्य और प्रत्याशित स्थिति में पहुँचने का यत्न कर रहे हैं सो यह सारी अनिश्चितताएँ और भी ज़्यादा व्यापक और खिजाऊ हो चली हैं। हमें यह पता चल रहा है कि *कोविड-19* के दौर में स्थिरता और निश्चितता साधना और भी कठिन हो गया। नतीजतन, बच्चे हैरान-परेशान हो सकते हैं और इस कारण उनका बर्ताव अनियंत्रित हो सकता है।"

अब जब बच्चे स्कूल वापसी कर रहे हैं तो उनकी वापस जुड़ने की तैयारी सुनिश्चित करने और स्कूली वातावरण में फिर से सीखने का मानस बनाने के उद्यम में व्यक्तिगत व सामूहिक बेहतरी के लिए अवकाश सृजित करना महत्त्वपूर्ण होगा।

कहानी से बहाली

सो, सामने जो महती काम आन पड़ा है, उसके लिए शिक्षक और शिक्षाविद कैसे अपनी तैयारी करें? क्या बाल साहित्य और कहानियाँ इस प्रक्रिया में मदद कर सकती हैं?

इसके लिए हमें पढ़ने को एकदम नई नज़र से देखना होगा। पढ़ना सिर्फ़ पढ़ने की क्रिया नहीं है, यह हमारे आसपास की दुनिया को समझने, समझाने और उसे ग्रहण करने का एक तरीक़ा है। डेनिस वॉन स्टॉकर[ii] लिखते हैं, "वैश्विक दृष्टिकोण से देखा जाए तो पढ़ना एक बहुत जटिल क्रिया है जिसमें न सिर्फ़ एक पाठ के अर्थ को समझा जाता है, बल्कि इसमें बच्चे से यह भी अपेक्षा रहती है कि उसके द्वारा अभी-अभी पढ़े गए पाठ को समझने में वह सक्षम होगा, अपने सन्दर्भ और निजी अनुभवों के साथ उसे जोड़ सकेगा और एक सोचे-समझे तरीक़े से उसे गुनते हुए उस पाठ पर अपनी बात रख सकेगा। सिर्फ़ इसी तरह की पूर्ण व गहन पठन शिक्षा ही बच्चों को एक असल, अविकल साक्षरता की ओर ले जाएगी।"

तो, कहानियाँ पढ़ना व सुनना, बच्चों के लिए अपनी नित बदलती दुनिया की अन्दरूनी व बाहरी समझ बना पाने के काम में एक महती भूमिका निभाता है। इसके लिए ज़रूरी संरचना में कहानियों को सामाजिक व भावनात्मक ज्ञानार्जन के माध्यम के रूप में उपयोग करना और इस प्रक्रिया को दुरुस्त महसूस करने का मौक़ा बनाना है।

मैं *बगुरी कम्युनिटी लाइब्रेरी प्रोजेक्ट* और एक अ-लाभकारी संगठन, *हसीरु दाला* के साथ काम करती हूँ, जो दक्षिण भारत में अनौपचारिक कचरा बीनने वालों के लिए काम करता है। यह उपक्रम उन बस्तियों में सामुदायिक पुस्तकालय चलाता है जहाँ कचरा बीनने वाले रहते हैं और समुदाय के सभी बच्चों को क़िताबें उपलब्ध करवाता है। ये बच्चे सबसे हाशियाई और जोखिम-ग्रस्त बच्चों में शुमार हैं और इसीलिए पुस्तकालय परियोजना के लिए उनकी सामाजिक व भावनात्मक ज़रूरतों को पूरा करना महत्त्वपूर्ण था। पुस्तकालय में, बच्चों की इन ज़रूरतों को हमारे काम में शामिल करने पर ध्यान दिया जाता है और प्रयास किया जाता है।

भावनाओं के लिए शब्दावली

सामाजिक-भावनात्मक ज्ञानार्जन का एक महत्त्वपूर्ण आयाम अपनी स्वयं की भावनाओं को पहचानना और उन्हें व्यक्त करना होता है। कई बार, बच्चों के लिए अपनी अनुभूत भावनाएँ समझ पाना या अपनी ज़रूरतों को व्यक्त कर पाना मुश्किल होता है। तिस पर, हमारी प्रचलित परम्परा के चलते हम बच्चों को कुछ ख़ास भावनाओं को अभिव्यक्त करने से रोकते हैं, ख़ासकर, ग़ुस्से और उदासी जैसी दुर्बोध अनुभूतियाँ को।

कोई तीन साल पहले, जब मैंने ऐसे बच्चों के साथ सोशल एंड इमोशनल लर्निंग (एसईएल) के मॉड्यूल पर काम करना शुरू किया, जो अब तक अपनी भावनाओं को व्यक्त नहीं कर पाए थे, तो मैंने उन्हें ऐसी कठपुतलियाँ दिखानी शुरू की जिनके चेहरे नाना प्रकार के भाव प्रदर्शित करते थे। जब मैंने उन बच्चों को एक मुस्कराते चेहरे वाली कठपुतली दिखाई और उनसे उसके भाव को नाम देने के लिए कहा तो उनमें से ज़्यादातर बच्चों ने जवाब दिया — *मुस्कान* । इस प्रकार पहले कुछ सत्र बुनियादी भावनाओं को समझने और उन्हें नाम देने में बीते। यह नामकरण, अभिव्यक्ति का एक महत्त्वपूर्ण अंग था, मिसाल के लिए, यह कहने में, "मैं तुमसे बात नहीं कर रहा क्योंकि मैं उदास हूँ।" किसी भाव के प्रति उनकी प्रतिक्रिया व उसके कारण के बीच के फ़र्क़ को समझने में बच्चों को कुछ समय लगा, उदाहरण के लिए, मुस्कराहट या हँसी ख़ुश होने पर आती है या आँसू (प्रायः) दुखी होने पर निकलते हैं। ज्यों ही यह समूह बुनियादी भावों को नाम देने और उनकी कहानियाँ साझा करने में मंजता गया, हमने हौले-हौले मिश्रित अनुभूतियों को लेकर होने वाली बातचीत के पट खोल दिए। उदाहरण के लिए, एक बच्ची को जब यह अभिव्यक्त करना था कि माँ के डाँटने पर वह कैसा महसूस करती है तो वह बोली कि उसे तब ग़ुस्सा आता है, लेकिन साथ ही साथ वह रोने भी लगी। मैंने उससे पूछा कि क्या ऐसा इसलिए कि वह कुछ और भी महसूस कर रही है? फिर जब मैंने उदास कठपुतली ऊपर उठाई तो उसने हाँ में गर्दन हिलाई। इससे मिली-जुली भावनाओं पर बातचीत शुरू हो गई। मैं सोचती हूँ कि चेतन-मन के विकास का यह एक ऐसा महत्त्वपूर्ण चरण है जिसमें विचारों और भावनाओं का नाता प्रतिक्रियाओं और व्यवहारों से जुड़ता है।

अनुभूत भावना के साथ उससे सम्बद्ध प्रतिक्रिया की परस्परता बनाने के लिहाज़ से शब्दावली का निर्माण एसईएल के साथ काम करने का एक निर्णायक प्रस्थान बिन्दु बन गया। टॉड व पेगी स्नो की फीलिंग्स *टु शेअर फ्रॉम ए टु ज़ेड*, जेनान केन की *द वे आइ फील*, डॉ सोइस की *माइ मैनी कलर्ड डेज़* जैसी क़िताबें बच्चों को अपनी भावनाओं को नाम देने, उन्हें सबल कहने और साझा करने के लिए आमंत्रित करती हैं।

सामाजिक-भावनात्मक सीख के लिए चित्र-पुस्तकें

अपने लेख *यूज़िंग चिल्ड्रन'स लिटरेचर टु बिल्ड सोशल-इमोश्नल स्किल* [iii] में बच्चों की पैरोकार व लेखक ट्रुडी लुड्विग कहती हैं, "सुलिखित व आयु-अनुकूल साहित्य में ऐसे अद्भुत शिक्षणीय क्षण मिलते हैं जिनमें बच्चे ये काम कर सकते हैं —

- कहानी के प्रमुख पात्र से एक पहचान बनाना
- किसी ख़ास मुद्दे को लेकर पात्रों के विचारों, मनोभावों और उनकी गतिविधियों के सन्दर्भ में सहज बोध अर्जित करना
- यह अहसास होने पर कि वे ही अकेले नहीं हैं जो इस समस्या से जूझ रहे हैं उन्हें विरेचन (दबी हुई भावनाओं का मोचन) अनुभव होता है
- यह देखकर कि पात्र अपनी समस्याओं से कैसे ख़ुद ही निपटते हैं और उनके कृत्य या बातों का क्या नतीजा रहा, वे भी अपनी समस्याओं को निपटाने के नए-नए रास्ते ढूँढ़ते हैं
- चर्चा के सहज क्रम के बतौर अपने निजी अनुभवों की साझेदारी करना।"

विकास के लिहाज़ से उपयुक्त चर्चाओं में विस्तार लेने वाली एक अच्छी कहानी बच्चों को वह अवसर प्रदान कर सकती है जिसमें वे उन भावनाओं को टटोलते-परखते हैं जो ऐसे द्वन्द्वों व/या प्रसंगों को उकसाती हैं जो ख़ुद उनकी व/या उनके मित्रों द्वारा आमतौर पर महसूस की जाने वाली भावनाओं के सदृश होते हैं। ऐसा सदृश अनुभव बच्चे को उसके एकाकीपन के खोल से बाहर निकलने में मदद करता है ताकि वे अपनी भावनाओं से दो-चार होने के नए रास्ते खोज सकें।

एक पुस्तकालय सत्र में जहाँ क्रोध की भावना को समझने की

कोशिश की जा रही थी, मैंने विनायक वर्मा की *एन्ग्री अक्कू* (प्रथम बुक्स) क़िताब का उपयोग किया और एक हद तक लुड्विग के सिद्धान्त को साकार होते देखा। क़िताब को ऊँची आवाज़ में पढ़ने के अभ्यास के दौरान, मैं उस बिन्दु पर ठहर गई जहाँ स्कूल में घटी एक शर्मिन्दा करने वाली घटना को लेकर अक्कू दुखी है। मैंने बच्चों से पूछा कि उनके हिसाब से अक्कू को क्या करना चाहिए। ज़्यादातर बच्चों की प्रतिक्रिया थी कि उसे उस बदमाश लड़के की पिटाई करनी चाहिए। लेकिन कहानी आगे बढ़ने के साथ ही, बच्चों को पता चला कि कहानी की नायिका, अक्कू, ने ऐसा नहीं किया। तब मैंने उनसे पूछा कि अक्कू द्वारा ऐसा न करने के बारे में उनके क्या विचार हैं। एक बच्चे का जवाब था, "उसमें आत्मनियंत्रण था।" इसके चलते यह चर्चा शुरू हुई कि कौन-सी बातें हमें गुस्सा दिलाती हैं और फिर हम इन भावनाओं पर कैसी प्रतिक्रिया देते हैं। जहाँ तक दोस्तों व शिक्षकों से व्यक्तिगत विवाद जैसे अन्य प्रसंगों की बात है तो बच्चों ने बताया कि कैसे उनके घरों में घरेलू हिंसा के कारण उन्हें ग़ुस्सा आता है।

अबोध्य भावनाओं को समझना

ऐसे ही एक प्रसंग में, नीना सबनानी की कहानी *मुकुन्द एंड रियाज़* (तूलिका बुक्स) ने चर्चा का मुख इस बात की ओर मोड़ दिया कि कैसे उन बदलती परिस्थितियों के चलते दोस्तियाँ टूट जाती हैं, जिन परिस्थितियों पर हमारा नियंत्रण नहीं होता और फिर उनकी यादें, हमें उदास और दुखी कर देती हैं। यह पुस्तक, 1947 में हुए भारत-पाकिस्तान विभाजन की पृष्ठभूमि में दो लड़कों की दोस्ती की पड़ताल करती है। इस क़िताब के लिए एक विस्तार गतिविधि की गई जिसमें बच्चों को, उन्हें सबसे ज़्यादा याद आने वाले व्यक्ति का या फिर किसी ख़ास स्मृति का चित्र बनाना था। इस गतिविधि के दौरान आठ साल की शरण्या ने अपने पिता का एक चित्र बनाया। उसके पिता ने पिछले बरस आत्महत्या कर ली थी। चित्र बनाने के उसने अनेक प्रयास किए, पर हर बार वह चेहरा बनाती, और उसे मिटा देती। अन्तत: उसने दो आकृतियाँ बनाईं। शुरू में मुझे लगा कि इस चित्र में वह पिता के साथ होगी। उस दिन उसके सत्र छोड़ने के बाद, मैंने कोमलता से उससे उस चित्र के बारे में पूछा। उसने बताया कि चित्र में दाहिनी आकृति उसके पिता की थी और बाईं ओर उसकी माँ थी। मैंने देखा कि उसकी माँ की आकृति बड़ी थी; शायद, आज शरण्या के जीवन में उसकी माँ की बड़ी उपस्थिति का चित्रण था वह।

सोच-समझ कर तैयार की गईं चित्र-पुस्तकें, साझा गतिविधियाँ व बातचीत, बच्चों के विकास के सिलसिले में उनकी सामाजिक व भावनात्मक ज़रूरतों पर सोचने के दौरान हमें बहुत समृद्ध वैचारिक आदान-प्रदान की ओर ले जा सकती हैं। आज जब बच्चे स्कूलों की ओर लौट रहे हैं, तो हो सकता है उनमें से कई बच्चे उत्साह और राहत का अनुभव करें, लेकिन उनके भीतर ऐसा बहुत कुछ बदल भी गया होगा जिसे समझने और सुलझाने की ज़रूरत है। इसलिए, इस वक़्त, स्कूल में एसईएल पाठ्यचर्या का सृजन कर साहित्य व कहानियों के जादू का इस्तेमाल करना एक अहम और बेहद ज़रूरी काम होगा।

Endnotes

i Is my child regressing due to the COVID 19 pandemic?

ii Stocker, Dennis Von (2009): The Importance of Literacy and Books in Children's Development - Intellectual, Affective and Social Dimensions

iii Ludwig, Trudy. 'Using Children's Literature to Build Social-Emotional Skills. Sept 24, 2018



लक्ष्मी करुणाकरण एक शिक्षाविद और पेशेवर सम्प्रेषक हैं। बेंगलूरु में रहती हैं। उन्होंने एक टेलीकॉम इंजीनियर, संचार विशेषज्ञ और एक शिक्षाविद के बतौर काम किया है। एक दशक से भी ज़्यादा समय तक उन्होंने सरकारी, स्पेशल *नीड्स* व *रेमीडिअल* स्कूलों तथा वंचित समुदायों में सामाजिक बहिष्कार अनुभव कर रहे बच्चों के साथ काम किया है। कूड़ा बीनने वाले लोगों के साथ काम कर रहे संगठन *हसीरु दाला* में वे कर्नाटक व आन्ध्र प्रदेश के कचरा बीनने वालों के कोई 700 से ज़्यादा बच्चों के लिए चलाए जा रहे स्कूल-बाद पुस्तकालय व कला-केन्द्र *बगुरी चिल्ड्रन्स प्रोग्राम* और *बगुरी कम्युनिटी लाइब्रेरी प्रोजेक्ट* की प्रमुख हैं। वे वॉरसा के सेंटर फ़ॉर कॉण्टेम्पररी आर्ट्स की आर्टिस्ट इन रेसिडंस, और आर्ट्स फ़ॉर गुड फ़ेलोशिप, 2019 सिंगापुर इंटरनैशनल फ़ाउण्डेशन की फ़ेलो भी रही हैं। वे 'टीचर प्लस' के लिए नियमित लिखती हैं। उनसे lakshmikarunakaran@gmail.com पर सम्पर्क किया जा सकता है।
अनुवाद : मनोहर नोतानी